शोध प्रस्ताव

खोरठा पद्य साहित्य में सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच. डी. उपाधि हेतु शोध–प्रारूप

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची
वर्ष : 2025

शोध निर्देशक

डॉ० अवध बिहारी महतो
सहायक प्राध्यापक (खोरठा)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची,
झारखण्ड

शोधार्थी

उर्मिला कुमारी
यू०जी०सी०–नेट
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची,
झारखण्ड

शोध–प्रस्ताव

खोरठा पद्य साहित्य में सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना :

भारत संघ के 28वें राज्य के रूप में 15 नवंबर, 2000 ई. को अस्तित्व में आए झारखंड राज्य को खनिज और वन–संपदा से समृद्ध प्रदेश के साथ ही भाषा–संस्कृति की विविधता और अनूठेपन के लिए जाना जाता है। गोंडवाना भूखंड के इस प्राचीन प्रदेश में प्राचीन काल से रहने वाले तीन प्रजाति के मानव समुदाय के द्वारा जो तीन भाषा परिवार (आग्नेय, द्रविड़ और आर्य) की भाषाएँ बोली जाती हैं। इन्हीं के बीच एक भाषा खोरठा है। खोरठा झारखंड के गैर जनजाति और कई जनजाति समुदाय की मातृभाषा है। साथ ही झारखंड के विस्तृत क्षेत्र की पारंपरिक संपर्क भाषा भी है। खोरठा भाषा के विद्वानों के अनुसार खोरठा बोलने वाले झारखंड में लगभग डेढ़ करोड़ है जो झारखंड के 24–जिलों में से 16–जिलों में फैले हुए हैं। खोरठा भाषा, जो झारखंड और इसके आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है, अपने लोकगीतों, लोककथाओं और विशेष रूप से पद्य साहित्य के माध्यम से सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम रही हैं।

एक लोकभाषा होने के चलते स्वाभाविक रूप से खोरठा भाषा का लोक साहित्य काफी समृद्ध है। खोरठा भाषी समुदाय ने लोक साहित्य के कई रूपों में साहित्य का अनमोल धरोहर हमें सौंपा है। वहीं बाद के प्रतिभावान खोरठा साहित्यकारों ने अपनी भाषा में शिष्ट साहित्य लेखन की परंपरा शुरू की, जो निरंतर आगे बढ़ती जा रही है।

शैक्षिक स्तर पर झारखंड की अन्य जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं के साथ एक भाषा–साहित्य विषय के रूप में खोरठा भाषा के स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन–अध्यापन का प्रावधान 1981–82 में किया गया। धीरे–धीरे निचली कक्षाओं में उतरते हुए अब आठवीं कक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई इस भाषा में होती है। साथ ही झारखंड राज्य की विभिन्न सेवाओं की नियुक्ति परीक्षाओं में एक भाषा पत्र के रूप में इसको स्थान दिया गया है। झारखंड राज्य में खोरठा को भी द्वितीय राज भाषा का दर्जा दिया गया है।

सामान्य बोलचाल के रूप में सैकड़ो वर्षो से प्रयोग रहने वाली खोरठा में 17वीं–सदी से साहित्य लिखने की परंपरा की शुरूआत मानी जाती है। तब से अब तक साहित्य की प्राचीन व नवीन विधाओं में लगातार रचनाएँ की जा रही हैं। खोरठा में पद्य साहित्य की रचना आरंभिक समय से ही हो रहा है। पद्य के दोनों रूपों पर काफी रचनाएँ पायी जाती है। खोरठा में पद्य लेखन की शुरूआत राजा दलेल सिंह, रामगढ़ राज्य के 5वीं–पीढ़ी के राजा से मानी जाती है। उन्होंने शिवसागर, रामरसार्णव, गोविंद लीलामृत नामक काव्यों की रचना की थी। दलेल सिंह के पुत्र रुद्रप्रताप सिंह के ज्ञानसुधाकर और राज कवि पदमदास ने 'काव्यमंजरी' काव्य की रचना की सूचना मिलती है। 18वी–सदी के बाद लोक कवियों ने खोरठा में अनेक भावप्रवण गीतों की रचनाएँ कीं। 20वीं–सदी के आरंभ में भुनेश्वर दत्त शर्मा व्याकुल ने गीतों के अतिरिक्त कुछ स्फुट कविताओं का भी सृजन किया था। लेकिन आधुनिक काल में श्रीनिवास पानुरी ने खोरठा साहित्य को नई पहचान दी। इन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उच्च स्तर की रचनाएँ की। मूलतः वे कवि थे, इसलिए उनका साहित्य सर्वाधिक पद्य रूप में ही पाया जाता है। लेकिन अधिकांश पद्य रचनाएँ अप्रकाशित हैं। पानुरी जी की प्रकाशित रचनाएँ हैं – बाल किरिन, दिव्य–ज्योति, रामकथामृत, आँखीक गीत आदि।

पानुरी जी के समय और बाद के खोरठा कवियों ने अनेक पद्य कृतियों का प्रणयन किया है। जिनमें रांगालाठी, सुलकसाय (विश्वनाथ नागर), दामुदरेक कोराञ, तातल आर हेमाल, मइछगंधा (शिवनाथ प्रमाािणक), डींड़ाक डोंआनी(बंशीलाल बंशी), ओंगठा (महेंद्र नाथ गोस्वामी सुधाकर), ककर नामें लिखब गीत (पंचम महतो) माराफरी, चाँदीक जुता, हिलोर (जनार्दन गोस्वामी व्यथित) माटिक घारें उगल चाँद(शांति भारत), जिनगीक डहर (कुमारी शशि) आदि उल्लेखनीय हैं।

किसी भी भाषा के साहित्य के किसी रूप में समाज अवश्य प्रतिबिंबित होता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। चाहे साहित्य का गद्य रूप हो अथवा पद्य रूप। खोरठा पद्य साहित्य में भी खोरठा क्षेत्र का स्थानीय समाज कई रूपों में दृश्यमान होता है। समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, छुआ–छूत, जात– पात, ऊँच–नीच, स्त्री–पुरुष में भेद–भाव जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ, कुरीतियाँ रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, पाखंड, आडंबर आदि एक आदर्श समाज निर्माण की बाधाएँ हैं। जो कि खोरठा के कवियों को उद्वेलित किया है और अपनी पद्य रचनाओं में इन बातों को प्रमुखता से स्थान दिया है। कवियों की पद्य रचनाओं में इनके प्रति समाज के लोगों का ध्यान खींचने के साथ ही इन अवांछितों के उन्मूलन के लिए लोगों में

चेतना भरने के प्रयास दिखाई पड़ते हैं। साथ ही अनेक ऐसे काव्य हैं जिनमें मानवीय संवेदनाएँ विविध रूपों में छलक उठी हैं।

खोरठा के कवियों की पद्य रचनाओं में समाज सुधार और मानवतावादी मूल्यों की स्थापना के लिए आए विचार एक आदर्श मानव समाज निर्माण के लिए काफी उपयोगी और प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। इसलिए इस पर शोध कार्य करना खोरठा काव्यों की अंतर्वस्तु के साथ ही काव्य के महत्व को उजागर करने की दिशा में आवश्यक कार्य हो सकता है।

प्रेरणा :

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा के अंतर्गत खोरठा भाषा विभाग, डॉ श्यामा प्रसाद विश्वविद्यालय राँची से खोरठा विषय से स्नातकोत्तर करते हुए मुझे खोरठा के कतिपय काव्य रचनाओं के अध्ययन का अवसर मिला। इससे अन्य खोरठा काव्य रचनाओं को पढ़ने की लालसा जागी। इस क्रम में दामुदरेक कोराञ, सोंध माटी, जिनगिक भेउ, आँखीक गीत, रूसल पुटुस आदि पद्य पुस्तकों की कविताएँ पढ़ने से मुझे ज्ञात हुआ कि खोरठा के पद्य साहित्य में सामाजिक चेतना के स्वर और मानवीय संवेदनाएँ प्रमुखता से अभिव्यंजित हैं। तभी से मेरे मन–मस्तिष्क में यह इच्छा जागी थी कि क्यों न इस विषय पर ठोस अध्ययन किया जाए। परंतु कुछ पारिवारिक और मातृत्व संबंधी जिम्मेदारियाँ इस पथ की तात्कालिक बाधा बनकर खड़ी हुई थीं। इसी बीच मैंने यू.जी.सी. - नेट परीक्षा पास किया तो यह संकल्पना पुनः जागृत हुई। मुझे पीएच.डी. उपाधि हेतु एक शोध विषय की आवश्यकता हुई। मैंने तब सोचा कि क्यों न खोरठा काव्यों में निहित सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए। इस विषय पर अपने पति से राय ली तो इन्होंने सहर्ष सहमति दी और इस कार्य को करने के लिए पारिवारिक जिम्मेदारियों में अपेक्षित सहयोग करने का आश्वासन दिया। तत्पश्चात मैंने अपने गुरूजनों से संपर्क कर अपनी इस योजना से अवगत कराया तो उन्होंने भी सहमति और आवश्यक सुझाव दिया।

परंतु किसी विषय पर पीएच.डी. हेतु शोध कार्य करने के लिए एक शोध निर्देशक की आवश्यकता पड़ती है। डॉ. श्यामा प्रसाद विश्वविद्यालय राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभागों जिसका नितांत अभाव हो गया है। फलतः मुझे

राँची विश्वविद्यालय, राँची की शरण में आना पड़ा। इस क्रम में राँची विश्वविद्यालय के अंतर्गत मारवाड़ी महाविद्यालय के खोरठा सहायक प्राध्यापक डॉ. अवध बिहारी महतो से अपने प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य के लिए निर्देशक भूमिका प्रदान करने का अनुरोध किया तो उन्होंने अपनी सहमति देकर मुझे अनुगृहीत किया। साथ ही प्रस्तावित विषय के लिए शोध प्रारूप बनाने में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन और सहयोग किया।

प्रस्तावित विषय पर अपने शोध प्रस्ताव को लेकर मैंने राँची विश्वविद्यालय, राँची के स्नातकोत्तर खोरठा विभाग की अनुभवी विदूषी प्राध्यापिका सह विभागाध्यक्षा डॉ. कुमारी शशि जी से मिली, साथ ही विभाग की विदूषी सहायक प्राध्यापिका डॉ. अर्चना कुमारी, डॉ. दिनेश कुमार दिनमणि, डॉ. निरंजन कुमार, डॉ. नकुल कुमार आदि शिक्षकों से भी मिली और शोध प्रारूप का अवलोकन कराया तो इनसे भी सहमति और अपेक्षित सुझाव प्राप्त हुए। अंततः मैंने शोध प्रारूप को अंतिम रूप दिया, जो प्रस्तुत है।

परिकल्पना :

किसी भी कार्य को करने से पहले कर्त्ता के मन–मस्तिष्क में उस कार्य से संबंधित एक परिकल्पना होती है। इसमें क्या करना है, कैसे करना होगा, इस कार्य का परिणाम क्या हो सकता है। इस कार्य को करने में क्या–क्या चुनौतियाँ आ सकती हैं, आदि–आदि। यह बात शोध कार्य में भी लागू होती है। प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य से संबंधित पूर्वकल्पना या परिकल्पना यह है कि मैं इस कार्य में खोरठा भाषा के उन सभी प्रकाशित काव्य का अध्ययन करूंगी जो सामाजिक विषय पर और मानवीय भावों को केंद्रित कर रचे गये हैं। इस विषय के केंद्रित काव्यों में निहित सामाजिक चेतना से जुड़े विचारों, प्रेरणाओं का अनुसंधान करूंगी। साथ ही शोध के दूसरे पक्ष के अनुसार खोरठा काव्यों में मानवीय संवेदना से जुड़े प्रसंगों की तलाश करूंगी। इसके लिए मैं खोरठा के सभी चर्चित काव्य रचनाओं का सांगोपांग अध्ययन करना आवश्यक समझती हूँ। प्रस्तावित शोध से संबंधित विषय–विंदुओं को संकलित कर उनके प्रसंगानुसार विश्लेषण का कार्य करूंगी। इसके लिए पूर्व में प्रकाशित अनुकूल शोध प्रबंधों, शोध आलेखों, समीक्षा आलेखों का भी अध्ययन करूंगी। इससे मुझे तत्संबंधी अपेक्षित सामग्री प्राप्त हो सकती है। इस समस्त कार्य में मेरी परिकल्पना है कि संबंधित शोध विधियों का अनुपालन

करते हुए, अपने शोध के द्वारा खोरठा पद्य साहित्य में निहित उन विचारों और भावनाओं को सहज–सरल भाषा में विश्लेषित कर समाज के समक्ष रख सकूँ जो मेरे प्रस्तावित शोध से संबंधित हो।

उद्देश्य :

किसी कार्य को करने के पीछे उस कार्य के औचित्य महत्वपूर्ण होता है। कोई शोध कार्य भी बिना औचित्य के महत्वहीन होता है। समाज में उस कार्य का कोई मोल नहीं होता है। औचित्य से तात्पर्य किसी कार्य की आवश्कता है। यानी यह कार्य करना क्यों आवश्यक है ? शोध कार्य के लिए चुने गये विषय के साथ भी यही प्रश्न है कि इस विषय पर शोध करना क्यों आवश्यक प्रतीत हुआ ? इस अनिवार्य प्रश्न पर विचार करते हुए मेरे मन में यह बात आयी कि संसार के सभी भाषा के साहित्य का प्रेय मानव समाज को बेहतर और सुंदर बनाना ही है। वह साहित्य किसी भी काल का या किसी भौगोलिक क्षेत्र का क्यों न हो। खोरठा साहित्य भी अपने स्तर से समाज को एक सुंदर रूप देने की भावना को ही लेकर चला है। समाज को सुंदर आदर्श रूप देने के लिए समाज में व्याप्त इसके बाधक तत्वों की पड़ताल और उसपर चोट कर मानव समुदाय को जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। खोरठा कवियों ने इस बात को समझते हुए अपनी भूमिका निभाने हेतु इस महत्वपूर्ण विषय पर काव्य रचे हैं, उसे साहित्य और समस्त बौद्धिक समाज के समक्ष रखना आवश्यक लगता है। किंतु इस दिशा में कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। इसलिए मुझे इस शोध कार्य को करना उचित प्रतीत होता है।

शोधव्याप्ति :

मेरे शोध कार्य की परिधि में खोरठा का पद्य साहित्य होगा। इसके अंतर्गत खोरठा पद्य साहित्य की वे काव्य कृतियाँ केंद्र में होंगी जिसमें सामाजिक चेतना के स्वर मुखरित और मानवीय संवेदना के भाव निहित हैं।

महत्व :

किसी भी कार्य के परिणाम की महत्ता उसकी उपादेयता से निर्धारित है, चाहे वह अन्वेषण कार्य ही क्यों न हो। मेरे शोध कार्य का महत्व भी इसकी उपादेयता पर

आश्रित होगा। प्रस्तुत शोध कार्य की संभावित उपयोगिता, उपादेयता अथवा महत्ता को निम्नलिखित विंदुओं में प्रस्तुत है –

- खोरठा पद्य साहित्य में निहित समाज हितकारी चिंतन को सुधी समाज जान पाएगा।
- खोरठा पद्य साहित्य के विचार पक्ष की प्रासंगिकता की विवेचित सामग्री उपलब्ध हो पाएगी।
- एक आदर्श मानव समाज निर्माण के हित में खोरठा साहित्य की उपयोगिता निरूपित हो पाएगी।
- खोरठा पद्य साहित्य में अभिव्यंजित मानवता के भाव और उसकी संवेदना को जानने–समझने का एक आधार मिलेगा।
- समाज में मानवीय मूल्यों के विकास में खोरठा कवियों की संबंधित संवेदना की उपयोगिता सिद्ध हो सकेगी।
- मानवतावाद के दृष्टिकोण से खोरठा पद्य साहित्य का मूल्यांकन और उसके स्थान के निरूपण का आधार मिल सकेगा।
- इस शोध कार्य से परवर्ती शोधार्थियों–विद्यार्थियों को अध्ययन की सामग्री और दिशा मिल सकेगी।
- समाज की बौद्धिक संपदा के विकास में एक योगदान होगा।

शोध प्रविधि :

उक्त सभी कार्य में संकायाध्यक्ष, शोध निर्देशक, शोध समिति के सदस्यों और संबंधित विद्वानों के मार्गदर्शन और मूल्यवान सुझावों का अनुपालन करूंगी। इसके लिए निम्नांकित आवश्यक शोध विधियों का उपयोग करना जरूरी होगा –

- **साक्षात्कार विधि**
- **अवलोकन विधि**
- **विश्लेषणात्मक विधि**
- **वैयक्तिक अध्ययन विधि**

अन्य, जो आवश्यक हो।

प्रयोग किये जाने वाले उपकरण –

1. संपर्क व संवाद हेतु दूरभाष
2. टाईप हेतु लेपटॉप
3. कागज–कलम–दफती
4. फोटोग्राफी व रिकार्डिंग हेतु स्मार्ट फोन
5. इंटरनेट

शोध–प्रस्ताव का अध्यायीकरण :

खोरठा पद्य साहित्य में सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय

पद्य साहित्य की अवधारणा और उसके रूप :

(क) पद्य साहित्य की परिभाषा और उसका स्वरूप

(ख) पद्य साहित्य के विविध रूप

(i) प्रबंधकाव्य – महाकाव्य और खण्डकाव्य

(ii) मुक्तक / स्फुट काव्य – कविता और गीत

द्वितीय अध्याय

खोरठा पद्य साहित्य की परंपरा :

(क) खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव और विकास।

(ख) खोरठा के प्रबंध काव्य :

(i) महाकाव्य

(ii) खण्डकाव्य

(ग) खोरठा के मुक्तक काव्य :

(i) कविता साहित्य

(ii) गीत साहित्य

तृतीय अध्याय

खोरठा पद्य साहित्य में सामाजिक चेतना :

(क) सामाजिक चेतना का परिचय और अवधारणा

(ख) खोरठा प्रबंध काव्य में सामाजिक चेतना के स्वर

(i) महाकाव्य में

(ii) खंडकाव्य में

(ग) खोरठा स्फुट काव्य में सामाजिक चेतना के स्वर

(i) कविता साहित्य में

(ii) गीत साहित्य में

चतुर्थ अध्याय

खोरठा पद्य साहित्य में मानवीय संवेदना की अभिव्यंजना :

(क) मानवीय संवेदना का परिचय और अवधारणा

(ख) खोरठा प्रबंध काव्य में मानवीय संवेदना

(i) महाकाव्य में

(ii) खंडकाव्य में

(ग) खोरठा स्फुट काव्य में मानवीय संवेदना

(i) कविता साहित्य में

(ii) गीत साहित्य में

पंचम अध्याय

खोरठा काव्य में समाज की दशा–दिशा का चित्रण :

(क) सामाजिक रूढ़ियाँ और कुरीतियाँ

(ख) सामाजिक कुप्रथाएँ और परंपराएँ

(ग) सामाजिक आडंबर और अंधविश्वास

(घ) सामाजिक मूल्य और आदर्श

षष्ठ अध्याय

खोरठा पद्य साहित्य में सामाजिक चेतना की वैचारिक दिशा और दृष्टिकोणः

(क) विचारधारा के प्रेरक स्रोत

(ख) सामाजिक विचार की दिशाएँ

(ग) समाजोन्नयन का दृष्टिकोण

(घ) विचारों की प्रासंगिकता और उपादेयता

सप्तम अध्याय

खोरठा पद्य साहित्य में मानवीय संवेदना के विविध आयाम और भंगिमाएँ :

(क) प्रेम भाव

(ख) करुणा भाव

(ग) दया भाव

(घ) मानवता भाव

(ङ.) सौहार्द भाव

(च) असहयोग भाव

उपसंहार

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथों की सूची
2. संदर्भ ग्रंथों की सूची
3. पत्र–पत्रिकाओं की सूची

नोटः आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्त्तन संभाव्य है।

शोध निर्देशक

डॉ० अवध बिहारी महतो
सहायक प्राध्यापक (खोरठा)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची,
झारखण्ड

शोधार्थी

उर्मिला कुमारी
यू०जी०सी०–नेट
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची,
झारखण्ड

आधार ग्रंथों की सूची

1. कुमारी, डॉ. अर्चना, खोरठा शिष्ट साहित्य : एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन(राँची), 2015.
2. कुमारी, डॉ. अहिल्या, खोरठा काव्य मे नौ रस, संवाद मीडिया, नई दिल्ली, 2018.
3. महतो, डॉ. अवध बिहारी, खोरठा साहित्य की सांस्कृतिक चेतना, संवाद मीडिया, नई दिल्ली, 2018.
4. दांगी, डॉ. आनंद किशोर, खोरठा कवियों का काव्यगत परिचय, झारखंड झरोखा, राँची, 2022.
5. झा, डॉ. ए.के., खोरठाक काठें पइदेक खंड़ी, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2011.
6. झा, डॉ. ए.के., खोरठ गइद–पइद संग्रह, पृथ्वी प्रकाशन, नई दिल्ली रोड, 2020.
7. प्रभाकर, गजाधर महतो, पुटुस फुल, खोरठा ढाकी छेतर कमिटी, बोकारो, 1988.
8. ओहदार, डॉ. बी.एन., खोरठा भाषा एवं साहित्य, उद्भव एवं विकास, मार्गदर्शन पब्लिकशन (राँची), 2018. .
9. कुमार, डॉ. बिनोद, धोवइयाक धमक, झारखंड झरोखा, रांची, 2000.
10. तिवारी, भोलानाथ, हिन्दी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023.
11. बंशी, लाल बंशी, खोरठा दर्पण, बोकारो खोरठा कमिटी, 1995.
12. शशि, डॉ. कुमारी, जिनगिक डहर, यादव कंप्यूटर, जिवजीगंज ग्वालियर, एम. प्रा, 2022.
13. प्रमाणिक, शिवनाथ, खोरठा काव्य का स्वरूप, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद, बोकारो, 1998.
14. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, विश्वभारतीय प्रकाश, 1929.

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. व्यथित, जनार्दन गोस्वामी, माराफरी, बालीडीह खोरठा कमिटी, 2001.
2. गोस्वामी, जनार्दन, चाँदीक जूता, बालीडीह, खोरठा कमिटी, 2008.
3. दिनेश, दिनमणि, सोहान लागे रे, झारखंड झरोखा, राँची, 2019.
4. बंशी, बंशीलाल, डींड़ाक डोंआनी, झारखंड झरोखा, 2017.
5. सुकुमार, बावाँ हाँथेक रतन, अखिल भारतीय खोरठा परिषद्, भेंडरा, 2009.
6. भारत, शांति, माटिक घरें उगल चाँद, खोरठा साहित्य–संस्कृति परिषद्, बोकारो, 2019.
7. प्रमाणिक, शिवनाथ, मइछगंधा, झारखंड झरोखा, राँची, 2014.
8. प्रमाणिक, शिवनाथ, रूसल पुटुस, झारखंड झरोखा, राँची, 2015.
9. प्रमाणिक, शिवनाथ, तातल आर हेमाल, खोरठा साहित्य कुटीर, बोकारो, 1998.
10. प्रमाणिक, शिवनाथ, दामुदरेक कोराञ, झारखंड झरोखा, राँची, 2014.
11. पानुरी, श्रीनिवास, आँखीक गीत, अर्जुन पानुरी, 2010.
12. महतो, संतोष कुमार, एक मउनी फूल, रामधन प्रकाशन, 1986.
13. महतो, संतोष कुमार, एक पथिया डोंगल महुआ, रामधन प्रकाशन, 1995.

पत्र–पत्रिकाएँ

1. इंजोर, संपादक, धनंजय प्रसाद, जनवादी लेखक संघ, देवघर.
2. करील, डॉ. बी. एन. ओहदार, कतरासगढ़, धनबाद, 1977.
3. तितकी, शांति भारत, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद, बोकारो.
4. प्रभात खबर (हिंदी दैनिक), विजय पाठक, राँची.
5. परास, महेंद्र प्रबुद्ध.
6. लुआठी, गिरिधारी गोस्वामी आकाशखूँटी, बालीडीह खोरठा कमिटी.
7. मातृभाषा, श्री निवास पानुरी, बरवाअडडा, धनबाद, 1970.
8. सहिया, अनिल कुमार विस्थापित, बोकारो, 2002.